A Unit of Global Hospital & Research Centre

जीवन सौरभ

Shivmani Geriatric Home

Jul - Sept 2022
Volume 30

अंदर देखिए

आध्यात्मिक दृष्टि ...1
बुद्धिमत्ता का प्रयोग ...2
स्नेहमयी भावांजलि ...4
अनुपम दृश्यावली ...5
श्री कृष्ण जन्मोत्सव ...9
दिव्य दर्पण ...10

आध्यात्मिक दृष्टि

हमारी आंखें ऐसी शक्तिशाली माध्यम है जिसके द्वारा हम आत्माएं ना केवल बाहरी सूचनाएं प्राप्त करती है बल्कि स्वयं को आंतरिक एवं बाह्य रूप से व्यक्त भी कर सकती हैं। आंखों के द्वारा ही हमारे अपने विचार, भावनाएं, दृष्टिकोण, सकारात्मक गुण, कमजोरियां और व्यक्तित्व के सभी लक्षण दूसरों के सामने व्यक्त किए जाते हैं, साझा किए जाते हैं। यदि हम दूसरों की ओर देखते हैं तो अपनी आंखों से उन पर शुद्ध स्नेह, शांति, सुख, पवित्रता एवं शक्तियों की वर्षा कर सकते हैं और यदि इन आंखों का सही उपयोग ना हो तो यह

दूसरों पर क्रोध, ईर्ष्या, नफरत, घृणा आदि के मनोभावों को भी व्यक्त कर सकती हैं। अर्थात हमारी आंखें हमारे अंतर्जगत में जो कुछ है उसे व्यक्त करने का एक साधन एवं माध्यम है।

यदि हम इस स्मृति में है कि मैं एक अति सूक्ष्म आत्मा हूं और मस्तक के बीच में निवास करती हूं तो हम अपनी आंखों के द्वारा अन्य को भी इसी आध्यात्मिक दृष्टि से देखने के आदी हो जाते हैं जिससे हमारी आध्यात्मिक उन्नति होती है। यदि हम दैहिक स्मृति में है तो हमारी आंखों के द्वारा हम वही देखेंगे जो कि दैहिक दृष्टि से दिखाई देता है, जिससे हमारी आध्यात्मिकता का स्तर नीचे हो जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से हम दूसरों को तुलना एवं प्रतिस्पर्धा की भावना की बजाय सभी को समभाव से देखने के लिए प्रेरित होते हैं।

आत्म चेतना की स्थिति में हम सभी आत्माओं को अपने भाइयों के रूप में देखते हैं बिल्कुल अपने समान स्तर पर ना तो उच्च, ना ही निम्न। आध्यात्मिक दृष्टि हमें उनके वर्तमान बाहरी व्यक्तित्व की बजाए प्रत्येक आत्मा के मूल सकारात्मक गुणों की याद दिलाती है। इस विश्व रंगमंच पर इस विशाल नाटक में विभिन्न भौतिक वेशभूषा के माध्यम से अपनी विभिन्न भूमिकाओं को निभाने के लिए प्रत्येक आत्मा ने किरदार लिया है। आयु, लिंग, रूप, स्थिति आदि जो कुछ भी हमें दिखाई देते हैं अस्थाई हैं, बस एक आत्मा का ही अस्तित्व भूतकाल में भी था, भविष्य में भी रहेगा तो इसी आध्यात्मिक दृष्टि के कारण हम आत्माएं

तुलनाओं से ऊपर होती हैं। हमारी अवस्था निम्न स्तर से उच्चतर होती जाती है।

बी.के ओम भाई
प्रोजेक्ट मैनेजर
शिवमणि होम

बुद्धिमत्ता का प्रयोग

हमारे जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं, जब हमें अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करना होता है; सही एवं गलत का निर्णय लेना होता है, तब भावना एवं विवेक के मध्य संतुलन होना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। तभी हम अच्छे एवं बुरे की पहचान कर पाते हैं, व्यक्ति का सही आंकलन कर पाते हैं | कई बार हम बाहरी मूल्यांकन तो करते हैं लेकिन आंतरिक रूप से मूल्यांकन नहीं कर पाते, जिससे समय आने पर कई बार हमें धोखा भी मिल जाता है | इसीलिए बाहरी व्यक्तित्व के साथ-साथ आंतरिक व्यक्तित्व का सही आंकलन आवश्यक है। केवल बाहरी पहनावे से ही हमें किसी के बारे में कोई विचार या धारणा नहीं बना लेनी चाहिए।

एक बार की बात है, राजमहल के द्वार पर एक साधु आया और द्वारपाल से बोला : " भीतर जाकर राजा से कहो कि, उनका भाई आया है। "

द्वारपाल ने समझा कि, शायद ये कोई दूर के रिश्ते में राजा का भाई हो जो सन्यास लेकर साधुओं की तरह रह रहा हो।
सूचना मिलने पर राजा मुस्कुराया और साधु को भीतर बुलाकर अपने पास बैठा लिया।
साधु ने पूछा : कहो अनुज, क्या हाल-चाल हैं तुम्हारे ?

" मैं ठीक हूँ आप कैसे हैं भैया ? "--- राजा बोला।
साधु ने कहा : " जिस महल में मैं रहता था, वह पुराना और जर्जर हो गया है। कभी भी टूटकर गिर सकता है। मेरे 32 नौकर थे, वे भी एक-एक करके चले गए। पाँचों रानियाँ भी वृद्ध हो गयीं और अब उनसे कोई काम नहीं होता। "
यह सुनकर राजा ने साधु को 10 सोने के सिक्के देने का आदेश दिया। साधु ने 10 सोने के सिक्के कम बताए।
तब राजा ने कहा : " इस बार राज्य में सूखा पड़ा है, आप इतने से ही संतोष कर लें। "
साधु बोला : " मेरे साथ सात समंदर पार चलो वहाँ, सोने की खदाने हैं। मेरे पैर पड़ते ही समुद्र सूख जाएगा। मेरे पैरों की शक्ति तो आप देख ही चुके हैं। "
अब राजा ने साधु को 100 सोने के सिक्के देने का आदेश दिया।

साधु के जाने के बाद मंत्रियों ने आश्चर्य से पूछा : " क्षमा करियेगा राजन, लेकिन जहाँ तक हम जानते हैं, आपका कोई बड़ा भाई नहीं है, फिर आपने इस ठग को इतना इनाम क्यों दिया ? "
राजन ने समझाया : " देखो, भाग्य के दो पहलु होते हैं। राजा और रंक। इस नाते उसने मुझे भाई कहा। "

" जर्जर महल से उसका आशय उसके बूढ़े शरीर से था, 32 नौकर उसके दाँत थे और 5 वृद्ध रानियाँ, उसकी 5 इन्द्रियाँ हैं। "
" समुद्र के बहाने उसने मुझे उलाहना दिया कि, राजमहल में उसके पैर रखते ही मेरा राजकोष सूख गया क्योंकि मैं उसे मात्र दस सिक्के दे रहा था, जबकि मेरी हैसियत उसे सोने से तौल देने की है। इसीलिए उसकी बुद्धिमानी से प्रसन्न होकर मैंने उसे सौ सिक्के दिए और कल से मैं उसे अपना सलाहकार नियुक्त करूँगा। "

इस प्रसंग से हमें ये सीख मिलती है कि, किसी व्यक्ति के बाहरी रंग रूप से उसकी बुद्धिमत्ता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसलिए हमें सिर्फ किसी ने खराब कपड़े पहने हैं या वो देखने में अच्छा नहीं है; उसके बारे में गलत विचार नहीं बनाने चाहिए..!!

बी.के. विजय बहन,
डिप्टी मैनेजर
शिवमणि होम

१४ सितंबर, को सभी शिवमणि होम निवासियों से मधुर वाणी ग्रुप से वरिष्ठ भ्राता बी.के. सतीश जी ने स्नेह मिलन किया तथा ज्ञान रत्नों की लेन-देन कर अपने अनुभवों से सभी को लाभान्वित भी किया।

अनुपम दृश्यावली

स्नेहमयी भावांजलि

2 5 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस एवं आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी की १५ वीं पुण्यतिथि के अवसर पर शिवमणि होम के निवासियों ने दादी जी की विशेषताओं को पुनः स्मृति में लाकर अपने जीवन में धारण करने का दृढ़ संकल्प किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अनुपम दृश्यावली

13 जुलाई को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुंबई, के वाइस प्रेसिडेंट भ्राता यू. एस. राव जी तथा गेल कंपनी, आबू रोड के जी.एम. भ्राता मधुसूदन जी ने शिवमणि होम का अवलोकन किया तथा प्रशासन संबंधी जानकारी प्राप्त की।

24 जुलाई को सभी शिवमणि होम निवासियों से लंदन की आदरणीया बी.के. गोपी बहन जी ने स्नेह मिलन किया तथा आदरणीया दादी जानकी जी के अंग- संग के अपने अनुभवों से सभी को लाभान्वित भी किया।

अनुपम दृश्यावली

सी.आर.पी.एफ. भरनी, बिलासपुर, फायर एवं एस.डी.आर.एफ. ट्रेनिंग सेंटर बिलासपुर, सेंट जेवियर स्कूल भरनी बिलासपुर, सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोटा, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोटा, पंडित सीवी रमन यूनिवर्सिटी कोटा, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उसलापुर, बिलासपुर में ईश्वरीय सेवार्थ कार्यक्रम किया गया, जिसमें शिवमणि होम, आबू रोड की बी.के. डॉक्टर मनीषा बहन ने सभी का मूल्यों के ऊपर ध्यान केंद्रित कराया। ओम शांति सरोवर, उसलापुर, ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर की सेवाकेंद्र संचालिका बी.के. छाया बहन ने सभी को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताया तथा आज के इस समय में किस रक्षा की आवश्यकता है और किस तरह से वह रक्षा हम कर सकते हैं उस पर प्रकाश डाला। सभी को रक्षा सूत्र बांध कर यह पर्व मनाया गया।

अनुपम दृश्यावली

15 अगस्त, शिवमणि होम में 75 वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को स्मृति सुमन अर्पित किए गए तथा सभी बुजुर्गों एवं सेवाधारियों ने शहीदों को अपने देशभक्ति से ओतप्रोत कविताओं एवं उदबोधन के द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर पूरे उमंग उत्साह के साथ 75 वां आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया।

आरोग्य वन, आबू रोड में 75 वां आजादी का अमृत महोत्सव बहुत ही जोश के साथ मनाया गया। जिसमें शिवमणि होम से डिप्टी मैनेजर बी.के. विजय बहन एवं ट्रॉमा सेंटर की डिप्टी डायरेक्टर बी.के. डॉ रोजा बहन एवं शिवमणि होम, ट्रॉमा सेंटर, शांतिवन, नर्सिंग स्कूल एवं कॉलेज के भाई बहनें भी सम्मिलित हुए। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर 75 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

अनुपम दृश्यावली

26 अगस्त को टैक्सेस, यू.एस.ए. से आदरणीया बी.के. डॉक्टर हंसा रावल बहन ने शिवमणि होम का अवलोकन किया तथा प्रशासन संबंधी जानकारी प्राप्त की।

5 सितंबर, आरोग्य वन, आबू रोड में निमित्त टीचर बहनों के साथ शिक्षक दिवस मनाया गया, जिसमें शिवमणि होम, शांतिवन, नर्सिंग स्कूल एवं कॉलेज के भाई बहनें भी सम्मिलित हुए।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व शिवमणि होम के प्रांगण में 1 सितंबर को अत्यंत धूमधाम से मनाया गया। जिसमें ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर बी.के. भ्राता डॉ प्रताप मिड्ढा जी, मलाड मुंबई सेवाकेंद्र से बी.के. कुंती बहन जी, ट्रस्टी भ्राता बी.के. रश्मिकांत जी, ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रॉमा सेंटर की डिप्टी डायरेक्टर बी.के. डॉक्टर रोजा बहन, नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या बी.के. शशीबाला बहन एवं शिवमणि होम के सभी वरिष्ठ नागरिक एवं सेवाधारी भाई बहनें सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के स्वागत-सत्कार से किया गया, जिसमें शिवमणि होम के प्रोजेक्ट मैनेजर बी.के. ओम भाई जी ने शब्दों के द्वारा अतिथियों का स्वागत किया तथा श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर सबको शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि जिनके जीवन में ज्ञान का सार समाहित है, ऐसे श्री कृष्ण समान हम भी अपना जीवन बनाएं तथा ह्रदय से सत्कार करते हुए सभी अतिथियों का बारंबार अभिवादन किया। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने नृत्य-नाटिका, गीत-कविता आदि में अपनी प्रतिभा दिखलाई।

ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर बी.के. भ्राता डॉ प्रताप मिड्ढा जी ने कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों की अत्यंत सराहना

करते हुए कहा कि ऐसा खुशी का माहौल बनाने के फाउंडेशन हम सभी आत्माएं हैं क्योंकि नयी सतयुगी दुनिया में खुशी ही रहेगी, दुख का नाम नहीं होगा क्योंकि जब परमपिता परमात्मा अवतरित होते तो अपने ज्ञान से हमारे मैं और मेरे-पन की, अहंकार की, जो जंजीरें थीं, उसे तोड़ते हैं और जो दरवाजे हमने बंद कर रखे थे, अपने नाम-मान-शान के, रूप के, संबंधों के, जाति के, उन्हें खोल कर हमारी आत्मिक चेतना को जागृत करते हैं, जिससे हम आत्म पंछी उड़ान भरने लगते हैं एवं इस पुरानी दुख की दुनिया से हमारा नाता टूट जाता है।

मालाड मुंबई सेवाकेंद्र से पधारीं बी.के. कुंती बहनजी ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्री कृष्ण का जीवन चरित्र सब को अच्छा लगता है। किसी को श्री कृष्ण की मित्रता अच्छी लगती है, किसी को श्री कृष्ण का बालपन अच्छा लगता है तो भाव यह है जब हम में सारी विशेषताएं आ जाती हैं व जब हम गुणवान हो जाते हैं तो सभी को अच्छे लगते हैं। अतः हमें ऐसा पुरुषार्थ करना है जो भविष्य में हमारी प्रालब्ध श्रेष्ठ हो। साथ ही उन्होंने इस भव्य कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों की अत्यंत सराहना की।

शिवमणि होम की डिप्टी मैनेजर बी.के. विजय बहन ने श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आध्यात्मिक भाव

समझाते हुए कहा कि श्री कृष्ण ही ऐसी श्रेष्ठ आत्मा है जिन्होंने सतयुग में 8 जन्म लिए और उन्हीं की यादगार में हम श्री कृष्ण जन्माष्टमी मना रहे हैं तो जो पुरुषार्थ श्री कृष्ण की आत्मा ने संगमयुग के समय में किया है तो क्यों ना वही पुरुषार्थ हम भी करें और हम भी श्री कृष्ण के समान 16 कला संपूर्ण एवं संपन्न बन जायें। साथ ही सर्व अतिथियों, कलाकारों एवं सेवा-साथियों का उमंग उत्साह बढ़ाया तथा आभार प्रदर्शन किया। उसके पश्चात मास का सामूहिक जन्मदिवस केक काटकर हर्षोल्लास से मनाया गया।

दिव्य दर्पण

परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने रूहानी सर्जन बन कर मुझ आत्मा की रक्षा की। हृदय रोग के कारण मेरी धड़कन काफी समय से ऊपर नीचे हो रही थी, चलना भी मुश्किल हो गया था, चलते- चलते चक्कर आते थे, गिरने का डर लगा रहता था। तभी अहमदाबाद में घर के नजदीक ही एक कार्डियोलॉजिस्ट थे, जिनसे मैंने अपॉइंटमेंट लिया और उन्होंने मेरी सारी जांच कराई और बताया कि आपके राइट साइड के वाल्व में लीकेज है, 10 दिन की दवाइयां दी और कई रिपोर्ट देखते हुए कहा कि आपको कार्डियक सर्जन को दिखाना होगा और ऑपरेशन करना ही पड़ेगा। मेरी रिपोर्ट देखकर मेरी लौकिक बहनें रोने लगी लेकिन मैं किसी भी परिस्थिति में घबराती नहीं हूं तो मैंने सोचा- शरीर भले छूटे तो भी कोई परवाह नहीं। मैं हंसते- हंसते ही शरीर छोड़ूंगी। मेरे अहमदाबाद के घर में 19 वर्षों से गीता पाठशाला चल रही है और वहां के सभी भाई बहनों ने मेरे लिए योग किया। शुभभावना भेजी और फोन द्वारा भी संपर्क करते रहे। मैं अस्पताल में हंसते-हंसते एडमिट हो गई। मुझे 10 दिन के लिए आई.सी.यू. में रखा गया। वहां 4 दिन मैंने केवल फल ही खाए क्योंकि अस्पताल में घर का भोजन लेना मना था। फिर मेरी टीचर बहन मुझसे मिलने अस्पताल में आई तो उन्होंने अस्पताल से घर के भोजन की परमिशन ले ली और मेरी एक बी.के. सहेली ने मुझे भोजन भेजना शुरू किया। ऑपरेशन की तारीख तय हो गई। सातवें दिन मेरा इको, एंजियोग्राफी कराया गया, बाद में ऑपरेशन करना था। महादेव नगर सेंटर में मेरी टीचर बहन ने बाबा को बोला कि बाबा आपको रूहानी सर्जन बनकर ज्योति बहन का ऑपरेशन करना है और 24 घंटे ज्योति बहन की छत्रछाया बनकर रहना है। रोज फोन द्वारा मेरा हालचाल पूछती रही और बाबा से योग लगाती रही। सातवें दिन इको का टेस्ट किया तो डॉक्टर ने बताया कि ऑपरेशन की जरूरत नहीं है। उसी दिन उसी डॉक्टर ने फिर से किया तो फिर वही जवाब मिला । 2 दिन के बाद फिर इको का टेस्ट किया तो और भी अच्छी रिपोर्ट आई। डॉक्टर बोले कि बहन जी आप को ऑपरेशन कराने की जरूरत नहीं है। आप एंजियोग्राफी करा लें, दूसरे दिन एंजियोग्राफी कराया तो वह भी नॉर्मल आया और मुझे डिस्चार्ज कर दिया गया। इस प्रकार बाबा ने और ब्राह्मण परिवार की दुआओं ने मेरे सूली के घाव को सुई से मिटाया। मीठे बाबा ने मुझे मौत के मुंह से बचाया। वाह बाबा वाह कमाल है आपकी। उसके पश्चात मैं घर आ गई। घर पहुंचने के बाद भी मुझे 2 दिन बाबा ने बड़े अच्छे अनुभव कराए-

1. मैं एक विमान में बैठने जा रही थी। विमान ऊंची गैलरी में था। मुझे लगा कि मैं इस विमान में कई बार बैठ कर गई हूं। मैं विमान के पास गई। विमान में सीढ़ी चढ़ते समय मैंने दूसरी और 2 सीढ़ियां देखी मैं एक सीढ़ी उतर कर सामने एक झूले में बैठ गई और दूसरी

सीढ़ी से कोई वरिष्ठ भाई हाथ में कुछ लेकर नीचे उतर रहे थे। सामने मेरा मृत शरीर पड़ा था, उसे आग लगाने वरिष्ठ भाई जा रहे थे। मेरे मृत शरीर के ऊपर लकड़ी भी चढ़ा दी गई और अचानक बाबा ने मुझे उठा लिया।

2. दूसरे दिन मैं एक मंदिर में गई, बहुत बड़ा शिव मंदिर था। मंदिर में 5 फीट का शिवलिंग था। वहां कुछ सेवा करने गई थी। मंदिर से मेरी जूती खो गई। मैंने पुजारी जी से कहा कि मेरी जूती खो गई है, आप मुझे यहां के स्टोर में से कोई जूती दे दें। कल मैं वापस दे जाऊंगी। पुजारी ने स्टोर में से एकदम चमकती हुई नई जूती निकाल कर मुझे दे दिया। मैंने कहा मुझे इतनी अच्छी जूती क्यों दे रहे हो कल तो वापस देना ही है। पुजारी जी बोले- अब यह नई जूती आपकी है। माना मेरी पुरानी शरीर रूपी जूती लेकर मुझे नई दे दी, अर्थात बाबा ने मुझे जीवनदान दिया।

शुक्रिया बाबा शुक्रिया आप का पदमा पदम शुक्रिया।

बी.के. ज्योति बहन
शिवमणि होम

चल जिंदगी नई शुरुआत करते हैं जो उम्मीद औरों से की थी वह अब खुद से करते हैं।

SHIVMANI GERIATRIC HOME
(Project of Global Hospital & Research Centre)
Near Global Hospital Trauma Centre
Taleti, Abu Road, Dist Sirohi
Rajasthan (India) - 307 510
9414092383; 9413372922 (Mobile)
9414037045; 9875050933 (Manager)
E-mail : shivmani.opk@gmail.com
Website : www.shivmani.org

Feedback

Valuable feedback and information may be emailed at
shivmanihome@gmail.com